E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विद्रोही संन्यासी उपन्यास की धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रासंगिकता

[1]महाराज सिंह धाकड़

[1]पी-एच.डी. शोधार्थी,सहायक प्राध्यापक,हिन्दी विभाग,शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्योपुर (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/03/2025

Paper date Publishing Date

10/03/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15001711

IMPACT FACTOR 5.924

ABSTRACT

हिन्दी उपन्यास विधा का यह दुर्भाग्य रहा है कि इस विधा के प्रति पूर्णतया समर्पित आलोचक हिन्दी में कम रहे हैं। हमारे मेधावी आलोचकों ने काव्य के सूक्ष्मतम और जटिल अनुभूति-संसार में जो चुनौतियाँ झेली हैं. बौद्धिक आनंद एवं रस प्राप्त किया है, सहृदयतापूर्वक परंतु अपेक्षित तटस्यता के साथ जो विश्लेषण क्षमता दिखायी है, उसे देखते हुए कहना पड़ता है कि हिन्दी का उपन्यास साहित्य उस सौभाग्य से वंचित ही रहा हैं। बार-बार यह प्रश्न उठाया गया है कि काव्य की तुलना में उपन्यास कम आधुनिक क्यों ? कम प्रयोगशील एवं कम महत्त्वाकांक्षी क्यों ? इसके उत्तर में यह कहा गया कि संवेदन की नवीनता, ताजगी और आवेग को क्षणमात्र में अभिव्यक्ति देकर उससे मुक्त होने की अथवा उससे उठने की जो राहत अथवा सार्थकता की अपरिसीम सुखद प्रेरणा काव्य के रचना- रत क्षणों के उपरांत मिलती है यह अपेक्षाकृत परंपराओं का वहन करने के लिए बाध्य अत्यधिक स्थिरवृत्ति की अपेक्षा करनेवाली अनुभूति के उत्तेजक क्षणों के आगे-पीछे संदर्भों का जाल स्ताते समय जीवट और कल्पना-शक्ति की बार-बार परीक्षा लेने वाली उपन्यास विधा की प्रसव पीड़ा में बहुत कम मिलती है।

मुख्यशब्द- पारसमणि, प्राणपण, शताजियों, पोंगापंथी, कालांतर

आदिशंकराचार्य की स्मृतियों पूरे मानव समाज के लिए मधुरता से भरी हुई है, जिसमें विविधता के साथ-साथ संघर्ष भी है। उनकी दूर दृष्टि अपवाद है, वे निरंतर श्रमशील एवं कार्यशील है और प्रत्येक क्षण का सपयोग करना जानते हैं। उन्होंने अपने ज्ञान के माध्यम से सनातन एवं संस्कृति को जीवन का प्रधान केन्द्र माना है। संस्कृत संस्कृति, धर्म और अध्यात्म जो कुछ भी श्रेष्ठ है। उसी से मानवता का निर्माण होता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

श्रीनगर से कामरूप कामाख्या और कलकत्ता से कोन्ति तक आदिशंकर के नाम की पारसमणि हमारा मार्ग प्रदीप्त करती गई। उस महान् यात्री के पदत्तिह्न खोजते हुए अनायास ही भारत भर की प्रदक्षिणा कब संपन्न हो गई पता नहीं चला।

हर सुधार कालांतर में स्वयं रूढि बन जाता है, हर क्रांति को पोंगापंथी बलते हुए और मुक्ति-योद्धाओं को तानाशाह बनते देखला इतिहास की आदत है। वे विद्रोही थे, उन्होंने मानव बलि समेत तत्समय के ढोंग, पाखंड, वामाचार का प्राणपण से विरोध किया। संन्यासी होते हुए उनमें यह कहने का साहस या कि मैं न मूर्ति हूँ, न पूजा हूँ, न पुजारी हूँ, न धर्म हूँ, न जाति हूँ।

आदिशंकराचार्य के पास आज के युवाओं के सभी प्रश्नों का उत्तर है, उनकी जिज्ञासाओं और कुंठाओं के भी। उनसे बड़ा प्रबंधन गुरु कौल होगा, जिसने शताब्दियों पहले केरल के गाँव से यात्रा प्रारंभ कर संपूर्ण राष्ट्र की चेतना और जीवन-पद्धति को बदल दिया।

जो संन्यासी संसार के सारे अनुशासनों से परे हुआ करते थे, उन्हें अखाड़ों और आश्रमों में संगठित कर अनुशासित और नियमबद्ध कर दिया। बौद्धों और हिंदुओं के संघर्ष को शांत कर दिया। शैवों, वैष्णवों, शाक्तों, गाणपत्यों, सभी को एक सूत्र में पिरो दिया।

उस अदभुत तेजस्वी बालक, चमत्कारी किशोर और सम्मोहक युवा शंकर की यह कथा आपको उनके विख्यात जीवन के अज्ञात प्रसंगों का दिग्दर्शन करा पाएगी।

आदिशंकराचार्य एक चत्मकारी बालक, दिग्विजयी धर्मयोद्धा, चुंबकीय व्यक्तित्व, भगवा संन्यासी, अयक यात्री, महाल संगठक, राष्ट्र निर्माता. विधि-निर्माता, अपूर्व वक्ता, अद्भुत कवि क्रांति दूत. युग प्रवर्तक एवं समाज सुधारक के रूप में आदिशंकराचार्य को जाला जाता है। आदिशंकराचार्य ने सनातन धर्म की प्रतीष्ठा तया भारत को आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधने के लिए पूर्व दिशा में गोवर्धन मठ, पश्चिम में शारदा मठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ तथा उत्तर में ज्योति मठ स्थातिप कि ये। उनके अपने जीवन में ऐसे बहुत से कार्य किये है, जो साहित्य और इतिहास के लिए उत्कृष्ट और अनुपम हैं। आदिशंकराचार्य ने श्रृंगेरी मठ की स्थापना की थी। उनका व्यक्तित्व में आकर्षण एवं चुंबकत्व था।

शंकर ने शांत चित्त से उत्तर दिया, हे महापंडित, ज्ञान की जय तो सदैव से निश्चित है, उसे आपके उलाहले के आश्रय की आवश्यकता नहीं है। जहाँ तक साकार और निराकार का विवाद है, यह आप सदृश पंडितों का बुद्धि-विलास है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है, इसलिए वह किसी आकार का बंधुआ नहीं है। जो आकार में ही सीमित है, वह ईश्वर नहीं हो सकता है, क्योंकि ईश्वर तो अपरिमित है। वह साकार भी है और निराकार भी। **(1)**

'आदिशंकराचार्य मण्डप में बैठे हुये है अपनी शांत मुद्रा में आदिशंकराचार्य ने अपनी योग्यता के द्वारा सत्य और असत्य का खण्डल किया है। उनमें अपार पांडित्य था, जिसके द्वारा निराकार और साकार ईश्वर को विभाजित किया। आदिशंकराचार्य ने अपने ज्ञान एवं विवेक के द्वारा ईश्वर को चुनौती दी यथार्थ, ब्रह्मा, विष्णु और महेश को अपने शास्त्रार्य के माध्यम से उनको मिथ्या सावित किया है।

आधुनिक भारत के अधिकांश लोग उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से अपरिचित हैं, जो परिचित भी हैं, उनमें से अधिकांश के मस्तिष्क में उनकी छवि एक पारंपरिक धर्माचार्य जैसी है। किसी युग प्रवर्तक कर्मयोगी, क्रांतिकारी सुधारक और सर्वसमन्वयी राष्ट्र निर्माता की नहीं उनके अद्वितीय व्यक्तित्व को पूजा ज्यादा गया, किंतु समग्रा सबसे कम गया है।

वे हमारे इतिहास के सबसे गलत ढंग से समझे गए महापुरुषों में भी शिखर पर हैं। उनके जीते जी उन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहा गया, तब आज के अज्ञान पर आश्चर्य कैसे करें। क्या आपने कभी सोचा है कि हमारा आज का भारत उनके द्वारा स्थापित चार मठों के चतुर्भुज के भीतर ही बता है ? तो क्या उन्हें भावी विखंडल का सदियों पूर्व ही आभास या।

उस कुरूप और उदंड चांडाल ने शुद्ध संस्कृत में शंकर से पूछा, आप किसे हटने को कह रहे हैं ? आत्मा को या देह को ? आत्मा तो सर्वव्यापी निष्क्रिय और शुद्ध है। यदि देह को हटने को कह रहे हो तो देह तो जड़ है-वह कैसे हटेगी ? फिर मेरी देह और तुम्हारी देह में क्या भिन्नता है ? तत्त्वदृष्टि से ब्राह्मण और चांडाल में कोई भेद है? गंगाजल

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

में प्रतिबिंबित सूर्य और सुरा में प्रतिबिंबित सूर्य में क्या अंतर है? अरे तुम्हारा कैसा ब्रह्मज्ञाल है। ? मालवों में भी छुआछूत का वित्तार कौन से वेद में है महाराज ? आत्मा और परमात्मा जब एक है तो आत्माओं में भेदभाव कैसे। **(2)**

आदिशंकराचार्य ने जातिवाद को समाप्त करने का प्रयास किया। चांडाल और शंकर का जो संवाद हुआ उसमें जीवन का यथार्थ और रस है। मनुष्य की दया और आत्मा एक दूसरे के पूरक है। मनुष्य को ब्रह्म ज्ञान आत्मा ने माध्यम से मिलता है। आदिशंकराचार्य ने तत्वदृष्टि के महान ज्ञाता थे। चांडाल ने अपने बौद्धिक अज्ञाल के माध्यम से उन्होंने आदिशंकराचार्य को सोचने लिए मजबूर कर दिया। श्रेष्ठ कौन है चांडाल या ब्राह्मण। उन्होंने अपने ब्रह्म ज्ञान के माध्यम से भ्रमों, आडंबरों, मतभेदों का खण्डल कर सनातन संस्कृति को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया।

शंकर का जीवन कई सारे विरोधाभासों का समुत्तय प्रतीत होता है। वह दार्शनिक और कवि, विद्वान् और संत रहस्यवादी और धार्मिक सुधारवादी, सबकुछ थे। यदि हम उनके व्यक्तित्व को याद करने का प्रयास करेंगे तो इनके इतने गुण उभरते हैं, जो पृथक् पृथक् छवि प्रस्तुत करते हैं। कोई एक उन्हें युवावस्था में बौद्धिक महत्त्वाकांक्षा में दीप्त एक निर्भीक और दृढ तार्किक के रूप में देखता है. कोई दूसरा उन्हें चतुर राजनीति के महाप्राज्ञ के रूप में स्वीकार करता है, जिन्होंने लोगों में एकता का मंत्र फूंकने का प्रयास किया, तीसरे की दृष्टि में वह शांत दार्शनिक हैं, जो निरुपम बोधकता के साथ जीवन और विचारों की विसंगतियों को एकलिष्ठ होकर समझाने का प्रयास कर रहे हैं, और चौथे के लिए यह ऐसे रहस्यवादी हैं, जो अब तक ज्ञात लोगों में सबसे बड़े हैं। उनके समान सार्वभौम मस्तिष्क वाले कम हुए हैं। **(3)**

मठ के परिसर में ही अनेक देवी-देवताओं के मंदिरों का निर्माण और मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा नियमित रूप से चलती रहती है। परिसर का नित्य विस्तार होता जाता है। महाविष्णु भुवनेश्वरी राम ब्रह्मा, हनुमान, गरुड. शालिग्राम, चंद्रमौलीश्वर, रत्नगर्भ गणपति आदि असंख्य देवी-देवता यहाँ विराजमान होते चले जा रहे हैं। आचार्य शंकर की सर्व समन्वयकारी दृष्टि सबको एक सूत्र में आवद्ध कर रही है।

टुकड़ों में विभाजित समाज के एकीकरण का अनूठा प्रयास अब सफल होता दिखाई दे रहा है। उनके मठ में श्री शारदांबा प्रधान हैं, किंतु स्थानीय ग्राम देवता से लेकर स्थानीय ऋषि-मुनि और उनके आराध्य देवी-देवताओं सबका सम्मान सबकी प्रतिष्ठा का ध्यान रखा गया है। **(4)**

विद्रोही सन्यासी में उपन्यासकार ने आदिशंकराचार्य की वैभवपूर्ण स्थिति एवं मनोदशा को व्यक्त किया है। आदिशंकराचार्य समन्वयवादी हैं दृष्टिकोण रखते है। उन्होंने सनातनधर्म की जीवन्त परम्परा को अधिक से अधिक व्यावहारिक सकारात्मक प्रभाव बनाने का प्रयास किया, जिससे आमजल के ऊपर सनातनधर्म का प्रभाव पड़े सलातलधर्म के द्वारा मनुष्य में दया, करुणा एवं मानवता के बीजों को रोपित किया जाता है।

महानुभावो, वेदांत की महिमा अलौकिक है, इसलिए इसका प्रचार मेरे जीवन का लक्ष्य है। वेदांत संसार के संताप को दूर करने के लिए चंद्रमा के समान शीतल है, किंतु पं. मंडल मिश्र ने कर्म मार्ग का आश्रय लेकर वेदांत की अवहेलना की है, इसलिए हे प्रिय मंडल, आप भी इस उत्तम मार्ग को स्वीकार कर लें अथवा मेरे साथ शास्वार्थ करें।

आत्मविश्वास से भरे हुए मंडल मिश्र भी ओजपूर्वक अपने स्थान पर खड़े हुए और बोले, यदि हजार मुखवाला शेषलाग भी मेरे सामने प्रतिवादी बनकर आए, तो भी में श्रुतिसम्मत कर्मकांड को छोड़कर आपके काल्पनिक दर्शन को कभी स्वीकार नहीं करूँगा। आपके मत का खंडन करने के लिए में शास्त्रार्य के लिए प्रस्तुत हूँ।

आदिशंकराचार्य की विचारधारा में शास्त्रार्थ करने की क्षमता थी। उन्होंने अपने शास्त्रार्थ के माध्यम से मनुष्य को एक निश्चित दिशा दी, जिससे मानव जीवन दूसरों के कल्याण के लिए बले। आदिशंकराचार्य एक मीमांसक, दार्शनिक, वित्तारक, शास्त्रकार, चिंतक एवं समाज के मूल्यांकनकर्ता ये। उन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा नये विचारों को स्थापित किया, जिससे मालवीय बुराईयों एवं अवगुणों का खण्डल किया जा सके। उन्होंने पूरी मालव जाति के कल्याण के लिए नयी विचारधाराऐं एवं अवधारणाओं को स्थापित किया, जिससे जीवन जीने के नये सिद्धान्त समार्थ्यवान बनें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 121.
2. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022. पृ. 64.
3. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 8.
4. राजीव शर्मा, विद्रोही संन्यासी, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022. पृ. 129.